जैन कन्या पाठशाला (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय

डॉ अनामिका जैन
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग

तृतीय प्रश्न पत्र
विशिष्ट रचनाकार : प्रेमचंद
एम ए (प्रथम वर्ष)
द्वितीय सेमेस्टर

‘पूस की रात’ प्रेमचंद की यथार्थवादी कहानियों में अग्रणी है। 1930 ई. में रचित यह कहानी प्रेमचंद द्वारा आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के रास्ते को छोड़कर यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपना लेने की घोषणा करती है। यह उस यात्रा की शुरुआत है जो 1936 में ‘कफ़न’ कहानी में चरम यथार्थ पर जाकर पूर्ण होती है। किसान वर्ग प्रेमचंद की चिंताओं में शीर्ष पर है। यह मार्मिक कहानी उनकी इसी चिंता का प्रतिनिधित्व करती है। कहानीकार ने इसमें किसान के हृदय की वेदना को कागज के पन्ने पर उतारा है।

पूस की रात’ की मूल समस्या गरीबी की है, बाकी समस्याएँ गरीबी के दुष्चक्र से जुड़ कर ही आई हैं। जो किसान राष्ट्र के पूरे सामाजिक जीवन का आधार है, उसके पास इतनी ताकत भी नहीं है कि ‘पूस की रात’ की कड़कती सर्दी से बचने के लिए एक कंबल खरीद सके। दूसरी ओर, समाज का एक ऐसा वर्ग है जिसके पास संसाधनों की इतनी अधिकता है कि उन्हें वह खर्च भी नहीं कर पाता है। यही है आवारा पूंजीवाद का चरम विकृत रूप; जिसकी वजह से समाज में आर्थिक विषमता की दरार दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अर्थव्यवस्था की इसी फूहड़ता एवं विकृति पर यह मार्मिक कहानी व्यंग्य करती है।

हल्कू तो सिर्फ एक माध्यम भर प्रतीत होता है। यह हल्कू की ही नहीं बल्कि हल्कू के माध्यम से कृषिप्रधान देश में रह रहे अरबों लोगों का पेट भरने वाले उस अन्नदाता किसान की हृदयविदारक कथा है जो सूरज के उदय होने से पहले ही खेतों में आ जाता है और अस्त होने के बाद भी खेत की मेंड़ पर बैठकर अपने सपनों को फसलों के माध्यम से पूरा करने का अरमान सजा लेता है । लेकिन वह अरमान पूरा कहाँ होता है ? एक समस्या से निकले नहीं कि दूसरी आकर सर पे खड़ी हो जाती है, एक भँवर

से निकले नहीं कि दूसरा उन्हें अपने चपेटे में ले लेता है | इसी जद्दोजहद में उसकी पूरी उम्र कट जाती है और एक दिन वह इस संसार को हमेशा-हमेशा के लिए छोड़कर अनंत यात्रा पर चला जाता है। प्रेमचंद गरीबी के मूल कारणों तक पहुँचते हैं। मार्क्स की भाषा में कहें तो हल्कू की गरीबी 'प्राकृतिक गरीबी' नहीं है जो उत्पादन की कमी से पैदा होती है। यह तो शोषण और संसाधनों के असमान वितरण से पैदा होने वाली 'कृत्रिम गरीबी' है; जिसे आज भी सामंती शक्तियाँ कायम रखना चाहती हैं। 'गोदान' के होरी की तरह हल्कू की भी

नियति है कि वह हर साल सेठ-साहूकारों से उधार ले और अपनी सारी कमाई सिर्फ सूद चुकाने में खर्च कर दे। उसने कंबल के लिए तीन रुपये बचाकर रखे तो थे किंतु वह धन सूद चुकाने में ही खर्च हो गया। इस शोषणपरक व्यवस्था के प्रति हल्कू की पत्नी मुन्नी की नाराज़गी इन शब्दों में व्यक्त होती है- "न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है । पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी

खेती से बाज आये ... ।" यह किसान दंपत्ति के दर्द का चरमोत्कर्ष है। उसका शोषण इस कदर हुआ है कि वह किसान के बजाय मजदूर बनना ज्यादा पसंद करने लगा है | पूस की रात' में किसान का जीवन संघर्ष एक अर्थ में 'गोदान' से भी ज्यादा कठिन है | होरी के सामने भी गरीबी, ऋणग्रस्तता और सर्द रात में फसल की रक्षा करने जैसी समस्याएँ हैं किंतु खेती को लेकर उसके मन में जो सम्मान का भाव है, वह उसे मजदूर बनने से मना करता है। किसानों के जीवन का वर्णन जितने सच्चे, मर्मस्पर्शी, जीवंत और मार्मिक तरीके से उन्होंने किया है वो शायद ही किसी

और ने किया हो। 'पूस की रात' कहानी भी उन्हीं कालजयी कहानियों में से एक है; जिसमें किसान के ह्रदय-विदारक पहलू को जीवंतता के साथ उजागर करती है।

धन्यवाद